

अभ्यास पुस्तिका

हिन्दी

कक्षा-दस

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	माह	पाठ्यक्रम
1.	अप्रैल	I. अपठित गद्यांश II. पदबंध III. मुहावरे IV. बड़े भाईसाहब V. कबीर VI. तताँरा-वामीरो कथा VII. रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर VIII. हरिहर काका IX. मीरा के पद X. औपचारिक पत्र XI. अनुच्छेद XII. सूचना लेखन XIII. विज्ञापन
2.	मई	I. अपठित गद्यांश II. रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर III. मुहावरे IV. डायरी का एक पन्ना V. पर्वत प्रदेश में पावस VI. अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले VII. औपचारिक पत्र VIII. अनुच्छेद IX. विज्ञापन X. सूचना लेखन

3.	जून	I. अपठित गद्यांश II. समास III. मुहावरे IV. औपचारिक पत्र V. अनुच्छेद VI. सूचना लेखन VII. विज्ञापन
4.	अगस्त	कविता - तोप

अपठित गद्यांश

दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही भारत के भावी कर्णधारों ने विचार करना आरंभ कर दिया था कि स्वाधीनता के पश्चात भारतीय शासन का क्या स्वरूप होगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत का संविधान तैयार किया गया, जो 26 जनवरी, 1950 को लागू कर दिया गया।

इस संविधान की विशेषता यह है कि इसमें सभी देशों में प्रचलित वैधानिक नियमों से भारत के लिए उपयोगी अच्छे नियम छाँटकर रखे गए हैं और इसे सर्वश्रेष्ठ संविधान बनाने की पूरी चेष्टा की गई है। भारतीय संविधान में 395 अनुच्छेद हैं, जो 22 भागों में विभक्त हैं। इसमें संविधान संबंधी प्रत्येक विषय की स्पष्ट, सरल एवं विस्तृत व्याख्या की गई है। राज्य के नीतियों के मुख्य आधार, नागरिकों के मौलिक आधार तथा भारतीय जनता के जीवन को सुखी और संपन्न बनाने के सिद्धांतों का स्पष्ट उल्लेख इस संविधान की विशेषता है। जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का राज्य इस यह संविधान का मूल उद्देश्य है। जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों द्वारा एक कार्यकारिणी बनाई जाती है, जो प्रतिनिधियों के प्रति उत्तरदायी होती है जिसका प्रमुख प्रधानमंत्री होता है।

भारतीय संविधान की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि इसमें नागरिकों के मौलिक अधिकारों का स्पष्ट वर्णन किया गया है। संविधान में भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है अर्थात् भारत का कोई भी नागरिक अपनी इच्छा से किसी भी धर्मिक अनुष्ठान का आयोजन कर सकता है। नागरिकों को धर्मप्रचार की पूरी छूट है, यदि उस प्रचार से सामाजिक शांति या व्यक्तिगत जीवन खतरे में न हो।

सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय प्राप्त करने तथा विचारों और विश्वासों को प्रकट करने की स्वतंत्रता है, किंतु राष्ट्र की एकता भंग करने या राष्ट्रद्रोह के विचार की स्वाधीनता नहीं है।

भारतीय संविधान अपने नागरिकों को सभी राजनीतिक विचारों को मानने की छूट देता है। भारतीय संविधान न साम्यवादी है, न पूँजीवादी। यह किसी आर्थिक सिद्धांत का भी अनुयायी नहीं। संविधान में वयस्क व्यक्तियों को मतदान का अधिकार प्राप्त है, जिसकी सहायता से वे शासन के संचालन में भाग ले सकते हैं।

1. गद्यांश को उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

a) भारतीय संविधान

- b) राजनैतिक विचार
- c) सामाजिक शांति या व्यक्तिगत जीवन
- d) शासन का संचालन

2. भारतीय संविधान का मूल उद्देश्य क्या है? (1)

- a) समाज में शांति बनाए रखना
- b) नागरिकों के मौलिक अधिकारों का वर्णन
- c) जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का राज्य
- d) राजनीतिक विचारों की छूट देना

3. भारतीय संविधान की क्या विशेषताएँ हैं?

- a) कोई भी नागरिक अपनी इच्छा से किसी भी धर्मिक अनुष्ठान का आयोजन कर सकता है।
- b) नागरिकों को धर्मप्रचार की पूरी छूट है
- c) विचारों और विश्वासों को प्रकट करने की स्वतंत्रता है
- d) उपर्युक्त सभी

4. भारतीय संविधान कब तैयार किया गया तथा उसे किस वर्ष लागू किया गया?

- a) 26 जनवरी, 1950
- b) 26 जनवरी, 1951
- c) 15 अगस्त, 1947
- d) कोई नहीं

5. कार्यकारिणी का प्रमुख कौन होता है ?

- a) मंत्री
- b) प्रधानमंत्री

c) जनता

d) कोई नहीं

पदबंध

जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें पदबंध कहते हैं।

सरल शब्दों में- जब दो या दो से अधिक पद मिलकर एक पद का कार्य करते हैं तब उन्हें पदबंध कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में- कई पदों के योग से बने वाक्यांशों को, जो एक ही पद का काम करता है, 'पदबंध' कहते हैं।

पदबंध के भेद



संज्ञा पदबंध

सर्वनाम पदबंध

विशेषण पदबंध

क्रिया पदबंध

क्रिया विशेषण पदबंध

निम्नलिखित प्रश्नों में रेखांकित पदों का पदबंध भेद बतायें।

1) श्रीधर के चार पुत्र थे।

i) क्रिया पदबंध

ii) सर्वनाम पदबंध

iii) विशेषण पदबंध

iv) संज्ञा पदबंध

2) धीरे चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।

i) संज्ञा पदबंध

ii) विशेषण पदबंध

iii) सर्वनाम पदबंध

iv) क्रिया पदबंध

3) अकलमंदी दिखते हुए आपने बालक को गिरने से बचा लिया।

- i) विशेषण पदबंध
- ii) क्रिया पदबंध
- iii) संज्ञा पदबंध
- iv) सर्वनाम पदबंध

4) बरगद के पेड़ की घनी छाँव से हमें गर्मी में भी ठंडक का एहसास हुआ

- i) क्रिया पदबंध
- ii) सर्वनाम पदबंध
- iii) विशेषण पदबंध
- iv) संज्ञा पदबंध.

5) दो हष्ट-पुष्ट लोग बड़े पत्थर को रास्ते से हटा पाए

- i) विशेषण पदबंध
- ii) क्रिया पदबंध
- iii) संज्ञा पदबंध
- iv) सर्वनाम पदबंध

6) राधा का कुत्ता अत्यंत सुंदर, और आज्ञाकारी है।

- i) विशेषण पदबंध
- ii) संज्ञा पदबंध
- iii) सर्वनाम पदबंध
- iv) क्रिया पदबंध

7) चोरी करने वाले बदमाशों में से कुछ पकड़े गए।

- i) क्रिया पदबंध
- ii) सर्वनाम पदबंध

iii) विशेषण पदबंध

iv) संज्ञा पदबंध

8) उस छत के कोने में बैठा हुआ व्यक्ति पागल है।

i) क्रिया पदबंध

ii) सर्वनाम पदबंध

iii) विशेषण पदबंध

iv) संज्ञा पदबंध

9) वह विद्यालय से निकल कर बाजार की ओर आया होगा।

i) विशेषण पदबंध

ii) क्रिया पदबंध

iii) संज्ञा पदबंध

iv) सर्वनाम पदबंध

10) राम किसी से अच्छा व्यवहार नहीं करता इसीलिए उसके जन्मदिन पर कोई नहीं आया।

i) क्रियाविशेषण पदबंध

ii) संज्ञा पदबंध

iii) सर्वनाम पदबंध

iv) विशेषण पदबंध

11) मुझे अपने घर की खिड़की से जंगल में सुन्दर गिलहरियाँ दिखाई दे रही है।

i) विशेषण पदबंध

ii) संज्ञा पदबंध

iii) सर्वनाम पदबंध

iv) क्रिया पदबंध

12) आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

- i) विशेषण पदबंध
- ii) क्रिया पदबंध
- iii) संज्ञा पदबंध
- iv) सर्वनाम पदबंध

13) वह दीपावली के उत्सव के लिए अपने दोस्त के साथ अपने घर चला गया।

- i) संज्ञा पदबंध
- ii) विशेषण पदबंध
- iii) अव्यय पदबंध
- iv) क्रिया पदबंध

14) पत्थर भारी होने के कारण नदी में डूब गया।

- i) संज्ञा पदबंध
- ii) सर्वनाम पदबंध
- iii) क्रिया पदबंध
- iv) क्रिया विशेषण पदबंध

15) इतनी लगन से काम करने वाला मैं असफल नहीं हो सकता ।

- i) क्रिया पदबंध
- ii) संज्ञा पदबंध
- iii) क्रियाविशेषण पदबंध
- iv) सर्वनाम पदबंध

16) सौरव की छोटा भाई राहुल पढ़ाई में बहुत होशियार है।

- i) संज्ञा पदबंध
- ii) क्रियाविशेषण पदबंध

iii) सर्वनाम पदबंध

iv) क्रिया पदबंध

17) तेज़ हवा चलने के कारण मोहन ने खिड़की और दरवाज़े को बंद कर दिया।

i) संज्ञा पदबंध

ii) सर्वनाम पदबंध

iii) क्रिया विशेषण पदबंध

iv) क्रिया पदबंध

18) मज़दूर लोग सुबह से शाम तक लगातार काम करते हैं तब जा कर उनके घर में खाना पकता है।

i) अव्यय पदबंध

ii) सर्वनाम पदबंध

iii) क्रिया विशेषण पदबंध

iv) क्रिया पदबंध

19) मेरी बेटी परीक्षा देने दिल्ली जा रही है।

i) क्रियाविशेषण पदबंध

ii) संज्ञा पदबंध

iii) सर्वनाम पदबंध

iv) विशेषण पदबंध

20) सिपाही जख्मी होने के कारण धीरे-धीरे चलते हुए सुरक्षित स्थान पर पहुँचा।

i) संज्ञा पदबंध

ii) सर्वनाम पदबंध

iii) क्रिया विशेषण पदबंध

iv) क्रिया पदबंध

समास

समास की पररभाषा: 'समास' शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'छोटा-रूप'। अतः जब दो या दो से अधिक शब्द (पद) अपने बीच की विभक्तियों का लोप कर जो छोटा रूप बनाते हैं, उसे समास, सामासिक शब्द या समस्त पद कहते हैं। जैसे 'रसोई के लिए घर' शब्दों में से 'के लिए' विभक्ति का लोप करने पर नया शब्द बना 'रसोई घर', जो एक सामासिक शब्द है। दूसरे अर्थ में- कम-से-कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' कहलाता है।

किसी समस्त पद या सामासिक शब्द को उसके विभिन्न पदों एवं विभक्ति सहित पृथक् करने की क्रिया को समास का विग्रह कहते हैं।

जैसे- विद्यालय = विद्या के लिए आलय, माता-पिता = माता और पिता।

समास छः प्रकार के होते हैं –

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. द्विगु समास
4. द्वंद्व समास
5. अव्ययीभाव समास
6. बहुब्रीहि समास

पदों की प्रधानता के आधार पर वर्गीकरण

पूर्व पद प्रधान – अव्ययीभाव समास

उत्तरपद प्रधान – तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु

दोनों पद प्रधान – द्वंद्व

दोनों पद अप्रधान – बहुब्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

1. तत्पुरुष समास – तत्पुरुष समास में तीसरा पद प्रधान होता है अर्थात् विभक्ति का लिंग वचन दूसरे पद के अनुसार होता है। इसका विग्रह करने पर कर्ता व संबोधन की विभक्तियों के

अतिरिक्त किसी भी कारक की विभक्ति प्रयुक्त होती है तथा विभक्तियों के अनुसार ही उसके उपभेद होते हैं।

क) तत्पुरुष (को)		ख) तत्पुरुष (से, के द्वारा)		ग) संप्रदान तत्पुरुष (के लिए)	
समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
कृष्णार्पण	कृष्ण को अर्पण	ईश्वर-प्रदत्त	ईश्वर से प्रदत्त	हवन-सामाग्री	हवन के लिए सामाग्री
नेत्र सुखद	नेत्रों को सुखद	हस्त-लिखित	हस्त से लिखित	विद्यालय	विद्या के लिए आलय
वन-गमन	वन को गमन	तुलसीकृत	तुलसी द्वारा रचित	गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
जेब कतरा	जेब को कतरने वाला	दयार्द्र	दया से आर्द्र	बलि-पशु	बलि के लिए पशु
प्राप्तोदक	उदक को प्राप्त	रत्न जड़ित	रत्नों से जड़ित		

घ) अपादान तत्पुरुष (से)		च) संबंध (का, के, की)		छ) अधिकरण तत्पुरुष (में, पर)	
समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	ईश्वर-प्रदत्त	ईश्वर से प्रदत्त	वनवास	वन में वास
पदच्युत	पद से च्युत	प्रेम-सागर	प्रेम का सागर	जीवदया	जीवों पर दया
मार्ग भ्रष्ट	मार्ग से भ्रष्ट	राजमाता	राजा की माता	ध्यान-मग्न	ध्यान में मग्न
देशनिकाला	देश से निकाला	अमचूर	आम का चूर्ण	घुड़सवार	घोड़े पर सवार
धर्म-विमुख	धर्म से विमुख	रामचरित	राम का चरित	दहीबड़ा	दही में डूबा बड़ा

नञ तत्पुरुष समास

जिस समास में पहला पद निषेधात्मक होता हो उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे –

समस्त पद	समास विग्रह
असंभ्य	न संभ्य
नालायक	न लायक
अनपढ़	न पढ़ा-लिखा

अनंत	न अंत
असंभव	न संभव

2. कर्मधारय समास – कर्मधारय समास में एक पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। इसमें कहीं-कहीं उपमेय उपमान का संबंध होता है तथा विग्रह करने पर ‘है जो’, ‘के समान’ व ‘रूपी’ शब्द प्रयुक्त होता है।

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
पुरुषोत्तम	पुरुषों में है जो उत्तम	मृगनयन	मृग के समान नयन
नीलकमल	नीला है जो कमल	चंद्रमुख	चंद्र के समान मुख
महापुरुष	महान है जो पुरुष	वचनमृत	वचन रूपी अमृत
घनश्याम	घन के समान श्याम	भवासागर	भाव रूपी सागर
कुपुत्र	बुरा है जो पुत्र	विद्याधन	विद्या रूपी धन
दुष्कर्म	दूषित है जो कर्म	नरसिंह	नर रूपी सिंह
लाल-मिर्च	लाल है जो मिर्च	मुख-चंद्र	मुख रूपी चंद्रमा
महर्षि	महान है जो ऋषि	शुभागमन	शुभ है जो आगमन
अधमरा	आधा है जो मरा	नीलाभ	नीली है जो आभा

3. द्वंद्व समास – इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। दोनों पद प्रायः एक दूसरे के विलोम होते हैं, सदैव नहीं। विग्रह करने पर और, अथवा, या का प्रयोग होता है।

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
माता-पिता	माता और पिता	पाप-पुण्य	पाप या पुण्य
दाल-रोटी	दाल और रोटी	भला-बुरा	भला या बुरा
अन्न-जल	अन्न और जल	अपना-पराया	अपना या पराया
जल-वायु	जल और वायु	धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
रुपया-पैसा	रुपया और पैसा	सुरासुर	सुर या असुर

शास्त्रार्थ	शस्त्र और अस्त्र	यशायश	यश या अपयश
कृष्णार्जुन	कृष्ण और अर्जुन	शीतातप	शीत या आतप
फल-फूल	फल और फूल	सत्यासत्य	सत्य या असत्य

- 4 **द्विगु समास** – इस समास में प्रायः पहला पद संख्यावाची होता है। द्विगु समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह का भेद कराती है। इसका विग्रह करने पर ‘समूह’ या ‘समाहार’ शब्द प्रयुक्त होता है।

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
दोराहा	दो राहों का समाहार	त्रिभुज	तीन भुजाओं का समाहार
पक्षद्वय	दो पक्षों का समूह	चौमासा	चार मासों का समूह
संपादक द्वय	दो संपादकों का समूह	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समाहार
सप्तऋषि	सात ऋषियों का समूह	सप्ताह	सात दिनों का समूह
शतक	सौ का समाहार	शताब्दी	सौ वर्षों का समाहार
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह	दशक	दश का समाहार
नवरत्न	नौ रत्नों का समूह	सतसई	सात सौ दोहों का समाहार

- 5 **बहुब्रीही समास** - इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। इस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है। इसका विग्रह करने पर जो, जिसका, जिसके, जिसकी, वह आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
गजानन	गज का आनन है जिसका वह (गणेश)	नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका वह
त्रिनेत्र	तीन नेत्र हैं जिसके वह (शिव)	षडानन	षट् आनन हैं जिसके वह
तिरंगा	तीन रंग हैं जिसमें वह (राष्ट्रध्वज)	महादेव	देवताओं में महान है जो वह जो वह
चंद्रशेखर	चंद्र है शेखर पर जिसके वह (शिव)	मयूरवाहन	मयूर है वाहन जिसका वह
चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी वह (विष्णु)	लंबोदर	लंबा है उदार जिसका वह

घनश्याम	घन जैसा श्याम है जो वह (कृष्ण)	चंद्रमुखी	चंद्र के समान मुखवाली है जो
दिगंबर	दिशाएँ ही हैं जिसका अंबर	अष्टाध्यायी	अष्ट अध्यायों की पुस्तक है जो

6 अव्ययीभाव समास – इस समास में प्रायः पहला पद प्रधान होता है। पहला पद या दूसरा पद अवयय होता है।

अव्ययीभाव समास में समस्त पद अव्यय के भाव का बोध करवाता है, अर्थात् समस्त पद को लिंग या वचन के आधार पर परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

यदि एक शब्द की पुरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयुक्त हों, वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है। संस्कृत के उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास होते हैं।

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	घर-घर	प्रत्येक घर
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो	हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में
यथाक्रम	क्रम के अनुसार	रातोंरात	रात ही रात में
यथाविधि	विधि के अनुसार	बीचोंबीच	ठीक बीच में
यथावसर	अवसर के अनुसार	साफ-साफ	बिलकुल साफ
यथेच्छा	इच्छा के अनुसार	भरपेट	पेट भरकर

(i) निम्नलिखित समस्त पदों का समास विग्रह कर भेद लिखिए-

समस्त पद	विग्रह	भेद
तुलसीकृत	_____	_____
लोकसभा	_____	_____
हवन सामग्री	_____	_____
नीलगगन	_____	_____
परमानंद	_____	_____

वचनामृत	_____	_____
दाल-रोटी	_____	_____
अयोग्य	_____	_____
धर्मभ्रष्ट	_____	_____
ग्रंथरत्न	_____	_____
दुश्चरित्र	_____	_____
धर्मानुसार	_____	_____
नवनिधि	_____	_____
पददलित	_____	_____
ईश्वरदत्त	_____	_____
शताब्दी	_____	_____
गुणहीन	_____	_____
वनवास	_____	_____
जगबीती	_____	_____
यथासामर्थ्य	_____	_____
चक्रधर	_____	_____
षडानन	_____	_____

(ii) निम्नलिखित समस्तपद एवं उनके विग्रह का सही नाम लिखिए –

- 1) सम्मानप्राप्त – सम्मान को प्राप्त
- 2) महात्मा – महान है जो आत्मा
- 3) स्नानघर – स्नान के लिए घर
- 4) जनसेवक – जन का सेवक
- 5) नील गगन - नीला है जो गगन

- 6) अंशुमाली – अंशु हैं माला जिसकी (सूर्य)
- 7) राधा-कृष्ण – राधा और कृष्ण
- 8) चतुर्मुख – चार मुखों का समूह
- 9) सतसई - सात सौ दोहों का समाहार
- 10) भरसक – पूरी ताकत से

दिए गए मुहावरों / लोकोक्तियों के अर्थ याद कीजिए –

i बड़े भाई साहब

मुहावरा	अर्थ
प्राण सूखना -	अत्यधिक डरना
प्राण निकलना -	भयभीत होना
पहाड़ होना -	बड़ी मुसीबत होना
आँख फोड़ना -	बड़े ध्यान से आँखें खोलकर पढ़ना
लगती बात -	दिल दुखाने वाली बात
जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना -	दिल को भारी धक्का पहुँचना
घाव पर नमक छिड़कना -	दुखी को और दुखी करना
तलवार खींचना -	लड़ने को तैयार होना
टूट पड़ना -	झपटना
हाथ डालना -	कार्य की शुरुआत करना
हँसी-खेल होना -	छोटी-मोटी बात

पास फटकना -	नज़दीक आना
गाड़ी कमाई -	मेहनत की कमाई
साथे से भागना -	देखते ही डरकर भागना
घुड़कियाँ खाना -	डॉट खाना
आड़े हाथों लेना -	कड़ा व्यवहार करना
खून जलाना -	बहुत मेहनत करना
तीर मारना -	बड़ा काम करना
नाम निशान मिटाना -	सब कुछ नष्ट करना
हेकड़ी जताना -	घमंड दिखाना
दिमाग होना / सिर फिरना -	घमंड होना
हाथ लगना -	प्राप्त होना
अंधा – चोट निशाना पड़ना -	अचानक कोई चीज़ मिलना
दाँतों पसीना आना -	मुश्किल उठाना
राह लेना -	चले जाना
पन्ने रँगना -	निरर्थक लिखना
पापड़ बेलना -	मेहनत / काम करना
आटे-दाल का भाव मालूम होना -	कठिनाई का सामना करना
जान तोड़ मेहनत करना -	खूब परिश्रम करना
उड़ जाना -	समाप्त होना / गायब होना
गिरह बाँधना -	मन में बिठाना
हाथ से जाना -	पास न रहना
हाथों में लेना -	जिम्मेदारी लेना
हाथ – पाँव फूल जाना -	घबरा जाना
दबे पाँव आना -	चुपचाप आना

हिम्मत टूटना -	साहस समाप्त होना
शब्द चाटना -	अच्छी तरह पढ़ना
ज़हर लगना -	बुरा लगना
चुल्लू भर पानी देने वाला -	कठिन समय में साथ देने वाला
अंधे के हाथ बटेर लगना -	अयोग्य व्यक्ति को कोई महत्वपूर्ण वस्तु मिलना
लोहे के चने चबाना -	बहुत कठिनाई में से गुजरना
चक्कर खाना -	भ्रम में पड़ना
बे-सिर पैर की बातें -	बेमतलब की बातें
जमीन पर पाँव न रखना -	बहुत खुश होना
मुठभेड़ होना -	सामना होना
पैसे-पैसे को मुहताज होना -	बहुत गरीब और मज़बूर होना
मुँह चुराना -	शर्म के कारण बचना
बेराह चलना -	गलत रास्ते पर चलना
जी ललचाना -	लोभ में आना
लोकोक्ति	अर्थ
छोटा मुँह बड़ी बात	हैसियत से अधिक बात बनाना

ii डायरी का एक पन्ना

रंग दिखाना -	प्रभाव दिखाना
ठंडा पड़ना -	ढीला पड़ना/क्रोध शांत होना
अलख जगाना -	परमात्मा को याद करना/दूसरों को प्रेरित करना

iii कबीर

आपा खोना
अँधियारा मिटना
मंत्र लगाना
घर जलाना

अहंकार नष्ट करना
अज्ञान दूर होना
कारगर उपाय होना
स्वयं को बलिदान करना

iv मीरा

लाज रखना

सम्मान बचाना

v तताँरा-वामीरो कथा

सुध-बुध खोना
बाट जोहना
आँखों में तैरना
खुशी का ठिकाना न रहना
आग बबूला होना
राह न सूझना
सुराग न मिलना
एक ही राग अलापना
होश आना

अपने वश में न रहना
प्रतीक्षा करना
मन में प्रकट होना
बहुत खुशी होना
बहुत क्रोध में आना
उपाय न मिलना
पता न मिलना
एक ही बात को बार बार कहना
समझ में आना

vi हरिहर काका

खुलकर बातें करना
मँझधार में फँसना
फुटी आँख न सुहाना

बिना संकोच के बात करना
मुसीबत में फँसना
बिल्कुल अच्छा न लगना

बातें बनाना
मोह भंग होना
आँखें भर आना
सहन शक्ति जवाब देना
बदन में आग लगाना
कान खड़े होना
सिर आँखों पर रखना
मुँह न खुलना
दिल पसीजना
तू-तू मैं-मैं होना
टोह में रहना
जी-जान से जुट जाना
चंपत हो जाना/फरार होना
तितर-बितर होना
खून खौलना
दूध की मक्खी
गिद्ध दृष्टि
आसमान से ज़मीन पर आना
खुलकर बातें करना
पाँव पखारना
मौज उड़ाना
रंग चढ़ना
रँगो हाथ पकड़ना
नमक-मिर्च मिलाना

बहाने बनाना
हकीकत का पता चलना
दुखी होना
हिम्मत हार जाना
बहुत क्रोध आना
सावधान होना
हुत सम्मान करना
कुछ न कह पाना
दया आना
झगड़ा होना
जानकारी लेने की कोशिश करना
भरपूर प्रयत्न करना
भाग जाना
भीड़ का इधर-उधर भागना
बहुत क्रोध आना
बेकार वस्तु
बुरी नज़र
वास्तविकता का अहसास होना
बिना संकोच के बात करना
सम्मान करना
खाना-पीना, मस्ती करना
असर होना
गलती करते हुए पकड़ना
बढ़ा-चढ़ा कर कहना

तूती बोलना

प्रभाव/दबाव होना

धमाचौकड़ी मचाना

उपद्रव करना/उछल-कूद करना

(i) निम्नलिखित मुहावरों के सही अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए-

1. फूटी आँख न सुहाना

उत्तर- _____

2. राह न सूझना

उत्तर- _____

3. रंग चढ़ना

उत्तर- _____

4. टोह में रहना

उत्तर- _____

5. कान खड़े होना

उत्तर- _____

(v) निम्नलिखित मुहावरों के सही अर्थ लिख वाक्य बनाए-

1) गिरह बाँधना

उत्तर - _____

2) हाथ पाँव फूल जाना

उत्तर - _____

1) चक्कर खाना

उत्तर - _____

2) रंग दिखाना

उत्तर - _____

3) आपा खोना

उत्तर - _____

(ii) निम्नलिखित मुहावरों के वाक्य बनाइए –

1) खून जलाना

उत्तर - _____

2) दाँतों पसीना आना

उत्तर - _____

3) आड़े हाथों लेना

उत्तर - _____

4) अपना घर जलाना

उत्तर - _____

5) आँखें फोड़ना

उत्तर - _____

साखी - कबीर

व्याख्या

ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होइ॥

कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य को अहंकार त्याग कर दूसरों के प्रति मधुर भाव रखना चाहिए क्योंकि उसकी वाणी ही उसके चरित्र और व्यक्तित्व की पहचान होती है। मनुष्य को सदा अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए क्योंकि उसके मुँह से निकली बात न केवल उसपर बल्कि दूसरों पर भी असर करती है। इसलिए मनुष्य को स्वयं के लिए व दूसरों के लिए मधुर व सुखद वाणी का प्रयोग करना चाहिए, इसी से सबको सुख मिलता है।

कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि- घटि राँम है, दुनियां देखै नाँहि॥

. कबीरदास जी कहते हैं कि ईश्वर कण-कण में हैं। जिस प्रकार कस्तूरी मृग की नाभि में होती है और वह उस खुशबू को जंगल भर में ढूँढ़ता फिरता है। इसी प्रकार मनुष्य भी यह नहीं जानता कि ईश्वर का वास उसके अपने हृदय में है। वह व्यर्थ ही ईश्वर को अनेक तीर्थस्थानों में खोजता फिरता है।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटी गया, जब दीपक देख्या माँहि॥

कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मनुष्य में अहंकार का भाव होता है, तब तक उसे ईश्वर की भक्ति -रूपी कृपा नहीं मिलती। जब ईश्वर में उसकी भक्ति हो जाती है तो उसका अहंकार दूर हो जाता है और ईश्वर की भक्ति के प्रकाश से उसके मन का अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है।

सुखिया सब संसार है , खायै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है , जागै अरु रोवै॥

कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य अज्ञानता के कारण अपनी वर्तमान स्थिति से ही नहीं बल्कि अपने भविष्य से भी अनजान है क्योंकि वह ईश्वर भक्ति न कर सुख भोगने में अपना जीवन नष्ट कर देता है। कबीरदास जी जैसे ज्ञानी ऐसे अज्ञानी मनुष्यों को देखकर दुखी होते हैं और वे उनके लिए जागते और रोते रहते हैं।

बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ।

राम बियोगी ना जिवै ,जिवै तो बौरा होइ॥

कबीरदास जी कहते हैं कि जिस भक्त के मन में ईश्वर से मिलन की तीव्र इच्छा जागृत हो गई हो, वह किसी भी स्थिति में चैन नहीं पाता। ईश्वर का वियोग उसे इतना व्याकुल कर देता है कि उसकी स्थिति एक पागल (बौरा) के जैसी हो जाती है। उसका जीवन विरह से बेचैन साँप की भाँति हो जाता है।

निंदक नेड़ा राखिये , आँगणि कुटी बँधाइ।

बिन साबण पाँणीं बिना , निरमल करै सुभाइ॥

कबीरदास जी निंदा करने वालों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि हमें निंदा करने वाले को अपना दुश्मन नहीं, अपना मित्र व हितैषी समझना चाहिए क्योंकि वे हमारे स्वभाव से हमारे दोषों को बिना साबुन और पानी के स्वच्छ बना देगा। ऐसे निंदक को अपने साथ रखने से धीरे-धीरे हमारे स्वभाव से सभी दोष दूर हो जाएँगे और हमारा व्यक्तित्व स्वच्छ और निर्मल हो जाएगा।

पोथी पढ़ि – पढ़ि जग मुवा , पंडित भया न कोइ।

ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ।

कबीरदास जी ईश्वर प्रेम का महत्व बताते हुए कहते हैं कि संसार के कई विद्वानों ने अनेक प्रकार के ग्रंथों व पुस्तकों का अध्ययन किया और इस संसार से चले गए लेकिन किसी को सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। परंतु जिसने भी ईश्वर प्रेम का एक अक्षर पढ़ लिया है वही वास्तविक ज्ञानी है। भाव यह है कि संसार के सभी जीव जंतुओं तथा प्रत्येक जड़ वस्तु के प्रति प्रेम भावना ही

वास्तविक अर्थों में ज्ञान प्राप्त करना है। हर प्राणी, हर वस्तु में ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव कर उसे प्रेम करना ही सच्चा ज्ञान है।

हम घर जाल्या आपणाँ , लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥

कबीरदास जी कहते हैं कि ईश्वर की भक्ति करने के लिए हमने अपने ही हाथ में जलती हुई लकड़ी लेकर अपना घर जला डाला क्योंकि इन सांसारिक आकर्षणों और इस शरीर रूपी चोले का त्याग किए बिना ईश्वर से मिलना असंभव है। कबीरदास जी कहते हैं कि यह संसार मिथ्या है। यहाँ सब कुछ नष्ट होने वाला है। पंच तत्वों से बना यह शरीर एक दिन पंच तत्वों में ही विलीन हो जाएगा। आत्मा तो सदैव परमात्मा से मिलने को बेचैन रहती है। इसलिए सांसारिक आकर्षणों की उपेक्षा करके और तप करके ही आत्मा परमात्मा को प्राप्त कर सकती है।

प्रश्न. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प लिखिए-

हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥

1) 'जलती हुई मशाल' किसका प्रतीक है –

- | | |
|-------------|-----------------|
| क) प्रेम का | ख) त्याग का |
| ग) घृणा का | घ) आत्मज्ञान का |

2) इस साखी में कवि क्या कहना चाहते हैं?

- | | |
|--------------------------|------------------------------|
| क) संसार में घूमने की | ख) संसार के प्रति विरक्ति को |
| ग) संसार से बाहर जाने की | घ) इनमें से कोई नहीं |

3) 'घर जाल्या आपणाँ' से क्या तात्पर्य है?

- क) अपने घर को आग लगाया ख) दूसरों के घर को देख जलना
ग) घर में दीये जलाना घ) भौतिक आकर्षणों को समाप्त करना

4) कवि ने कौन सी भाषा का प्रयोग किया है?

- क) हिन्दी भाषा ख) ब्रज भाषा
ग) सधुक्कड़ी घ) देवनागरी

5) कवि और कविता का नाम है:

- क) रहीम-दोहे ख) कबीर-साखियाँ
ग) तुलसीदास-रामचरितमानस घ) बिहारी-दोहे

पाठ - बड़े भाईसाहब

पाठ सारांश

प्रस्तुत पाठ में एक बड़े भाई साहब हैं जो हैं तो छोटे ही परन्तु उनसे छोटा भी एक भाई है। वे उससे कुछ ही साल बड़े हैं परन्तु उनसे बड़ी – बड़ी आशाएं की जाती हैं। बड़े होने के कारण वे खुद भी यही चाहते हैं कि वे जो भी करें छोटे भाई के लिए प्रेरणा दायक हो। भाई साहब उससे पाँच साल बड़े हैं, परन्तु तीन ही कक्षा आगे पढ़ते हैं। वे अपनी शिक्षा की नींव मज़बूती से डालना चाहते थे ताकि वे आगे चल कर अच्छा मुकाम हासिल कर सकें। वे हर कक्षा में एक साल की जगह दो साल लगाते थे और कभी-कभी तो तीन साल भी लगा देते थे। वे हर वक्त किताब खोल कर बैठे रहते थे।

लेखक का मन पढ़ाई में बिलकुल भी नहीं लगता था। अगर एक घंटे भी किताब ले कर बैठना पड़ता तो यह उसके लिए किसी पहाड़ को चढ़ने जितना ही मुश्किल काम था। जैसे ही उसे ज़रा सा मौका मिलता वह खेलने के लिए मैदान में पहुँच जाता था। लेकिन जैसे ही खेल खत्म कर कमरे में आता तो भाई साहब का वो गुस्से वाला रूप देखा कर उसे बहुत डर लगता था। बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँटते हुए कहते हैं कि वह इतना सुस्त है कि बड़े भाई को देख कर कुछ नहीं सीखता। अगर लेखक अपनी उम्र इसी तरह गवाना चाहता है तो उसे घर चले जाना चाहिए और वहाँ मजे से गुल्लि-डंडा खेलना चाहिए। कम से कम दादा की मेहनत की कमाई तो खराब नहीं होगी।

भाई साहब उपदेश बहुत अच्छा देते थे। ऐसी-ऐसी बातें करते थे जो सीधे दिल में लगती थीं लेकिन भाई साहब की डाँट – फटकार का असर एक दो घंटे तक ही रहता था और वह इरादा कर लेता था कि आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा। यही सोच कर जल्दी जल्दी एक समय सारणी बना देता। परन्तु समय सारणी बनाना अलग बात होती है और उसका पालन करना अलग बात होती है।

वार्षिक परीक्षा हुई। भाई साहब फेल हो गए और लेखक पास हो गया और लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आया। अब लेखक और भाई साहब के बीच केवल दो साल का ही अंतर रह गया था। इस बात से उसे अपने ऊपर घमण्ड हो गया था और उसके अंदर आत्मसम्मान भी बढ़ गया था। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि वे ये मत सोचो कि वे फेल हो गए हैं, जब वह उनकी

कक्षा में आएगा, तब उसे पता चलेगा कि कितनी मेहनत करनी पड़ती है। जब अलजेबरा और जामेट्री करते हुए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और इंग्लिस्तान का इतिहास याद करना पड़ेगा तब उसे पता चलेगा। बादशाहों के नाम याद रखने में ही कितनी परेशानी होती है। परीक्षा में कहा जाता है कि -‘समय की पाबंदी’ पर निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम नहीं होना चाहिए।

अब आप अपनी कॉपी सामने रख कर अपनी कलम हाथ में लेकर सोच-सोच कर पागल होते रहो। लेखक सोच रहा था कि अगर पास होने पर इतनी बेइज्जती हो रही है तो अगर वह फेल हो गया होता तो पता नहीं भाई साहब क्या करते, शायद उसके प्राण ही ले लेते। लेकिन इतनी बेइज्जती होने के बाद भी पुस्तकों के प्रति उसकी कोई रुचि नहीं हुई। खेल-कूद का जो भी अवसर मिलता वह हाथ से नहीं जाने देता। पढ़ता भी था, लेकिन बहुत कम। बस इतना पढ़ता था की कक्षा में बेइज्जती न हो।

फिर से सालाना परीक्षा हुई और कुछ ऐसा इतिफाक हुआ कि लेखक फिर से पास हो गया और भाई साहब इस बार फिर फेल हो गए। जब परीक्षा का परिणाम सुनाया गया तो भाई साहब रोने लगे और लेखक भी रोने लगा। अब भाई साहब का स्वभाव कुछ नरम हो गया था। कई बार लेखक को डाँटने का अवसर होने पर भी वे लेखक को नहीं डाँटते थे, शायद उन्हें खुद ही लग रहा था कि अब उनके पास लेखक को डाँटने का अधिकार नहीं है और अगर है भी तो बहुत कम। अब लेखक की स्वतंत्रता और भी बड़ गई थी। वह भाई साहब की सहनशीलता का गलत उपयोग कर रहा था। उसके अंदर एक ऐसी धारणा ने जन्म ले लिया था कि वह चाहे पढ़े या न पढ़े, वह तो पास हो ही जायेगा। उसकी किस्मत बहुत अच्छी है इसीलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हो गया। अब लेखक को पतंगबाज़ी का नया शौक हो गया था और अब उसका सारा समय पतंगबाज़ी में ही गुजरता था। फिर भी, वह भाई साहब की इज्जत करता था और उनकी नजरों से छिप कर ही पतंग उड़ाता था। एक दिन शाम के समय, हॉस्टल से दूर लेखक एक पतंग को पकड़ने के लिए बिना किसी की परवाह किए दौड़ा जा रहा था।

अचानक भाई साहब से उसका आमना-सामना हुआ, वे शायद बाजार से घर लौट रहे थे। उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े क्रोधित भाव से बोले ‘इन बेकार के लड़कों के साथ तुम्हें बेकार के पतंग को पकड़ने के लिए दौड़ते हुए शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि अब तुम छोटी कक्षा में नहीं हो, बल्कि अब तुम आठवीं कक्षा में हो गए हो और मुझसे सिर्फ एक कक्षा पीछे पढ़ते हो। आखिर आदमी को थोड़ा तो अपनी पदवी के बारे में

सोचना चाहिए। समझ किताबें पढ़ लेने से नहीं आती, बल्कि दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं कि यह घमंड जो अपने दिल में पाल रखा है कि बिना पढ़े भी पास हो सकते हो और उन्हें लेखक को डाँटने और समझने का कोई अधिकार नहीं रहा, इसे निकाल डालो। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रस्ते पर नहीं जा सकता। बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं कि अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी।

लेखक भाई साहब की इस समझाने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज लेखक को सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लिए उसके मन में इज्जत और भी बढ़ गई। लेखक ने उनके प्रश्नों का उत्तर नम आँखों से दिया कि भाई साहब जो कुछ कह रहे हैं वो बिल्कुल सही है और उनको ये सब कहने का अधिकार भी है।

भाई साहब ने लेखक को गले लगा दिया और कहा कि वे लेखक को पतंग उड़ाने से मना नहीं करते हैं। उनका भी मन करता है कि वे भी पतंग उड़ाएँ। लेकिन अगर वे ही सही रास्ते से भटक जायेंगे तो लेखक की रक्षा कैसे करेंगे ? बड़ा भाई होने के नाते यह भी तो उनका ही कर्तव्य है।

इतिफाक से उस समय एक कटी हुई पतंग लेखक के ऊपर से गुज़री। उसकी डोर कटी हुई थी और लटक रही थी। लड़कों का एक झुण्ड उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। भाई साहब लम्बे तो थे ही, उन्होंने उछाल कर डोर पकड़ ली और बिना सोचे समझे हॉस्टल की ओर दौड़े और लेखक भी उनके पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

प्रश्न. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

मगर टाइम-टेबल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वालीबॉल की वह तेजी और फुर्ती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबल, वह आँख-फोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाईसाहब को नसीहत और फजीहत करने का मौका मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा

करता, कमरे में इस प्रकार दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरे ओर पड़ी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर नंगी तलवार लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

प्रश्न 1 - टाइम-टेबल बना लेने पर भी लेखक उस पर अमल क्यों नहीं कर पाया?

- (A) लेखक प्रकृति प्रेमी था।
- (B) वह अपनी किशोरावस्था के अनुरूप चंचल प्रवृत्ति का था।
- (C) लेखक का मन पढ़ाई में ज़्यादा और खेलकूद में कम लगता था।

प्रश्न 2 - खेलकर वापस आने पर छोटे भाई की क्या प्रतिक्रिया होती?

- (A) वह भाईसाहब की नज़रों से दूर रहने की कोशिश करता था।
- (B) लेखक फिर से नया टाइम-टेबल बनाने का प्रयत्न करता था।
- (C) घर आते ही वह किताबें खोलकर बैठ जाता था।
- (D) उपर्युक्त सभी विकल्प गलत हैं।

प्रश्न - 3 - छोटा भाई भाईसाहब की नज़रों से दूर रहने का प्रयास क्यों करता था?

- (A) क्योंकि लेखक मोह-माया के बंधन में जकड़ा हुआ था।
- (B) क्योंकि ऐसा करने से वह पढ़ाई करने और उपदेश सुनने से बच सकता था।
- (C) क्योंकि उसे हमेशा सिर पर नंगी तलवार लटकती मालूम होती थी।
- (D) ख और ग दोनों विकल्प सही हैं।

प्रश्न- 4 - 'मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए?

- (A) जीवन में कितनी भी मुसीबतें क्यों न आएँ, पर मनुष्य कभी भी मोह-माया से अलग नहीं रह सकता।
- (B) खेल के सामने भाईसाहब की डांट, नसीहत कुछ असर न करती थीं।
- (C) लेखक घुड़कियाँ खाकर भी खेल का तिरस्कार न कर पाया।
- (D) उपर्युक्त सभी विकल्प सही हैं।

प्रश्न-5 - इस गद्यांश द्वारा लेखक के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है?

- (A) लेखक अपने भाईसाहब से बहुत डरता था किन्तु उनका सम्मान नहीं करता था।
- (B) लेखक स्वभाव से बहुत संयमी था और भाईसाहब का बहुत सम्मान करता था।
- (C) लेखक साहसी और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले थे।
- (D) लेखक खेल प्रेमी थे और उनका मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था।

तताँरा वामीरों कथा

पाठ सारांश

प्रस्तुत पाठ 'तताँरा वामीरो कथा' अंडमान निकोबार द्वीप समूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित है। उस द्वीप पर एक -दूसरे से शत्रुता का भाव अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच चुका था। इस शत्रुता की भावना को जड़ से उखाड़ने के लिए एक जोड़े को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी जोड़े के बलिदान का वर्णन लेखक ने प्रस्तुत पाठ में किया है।

बहुत समय पहले, जब लिटिल अंडमान और कार -निकोबार एक साथ जुड़े हुए थे, तब वहाँ एक बहुत सुंदर गाँव हुआ करता था। उसी गाँव के पास में ही एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। जिसका नाम तताँरा था। निकोबार के सभी व्यक्ति उससे बहुत प्यार करते थे। इसका एक कारण था कि तताँरा एक भला और सबकी मदद करने वाला व्यक्ति था। जब भी कोई मुसीबत में होता तो हर कोई उसी को याद करता था और वह भी भागा -भागा वहाँ उनकी मदद करने के लिए पहुँच जाता था।

तताँरा हमेशा अपनी पारम्परिक पोशाक ही पहनता था और हमेशा अपनी कमर में एक लकड़ी की तलवार को बाँधे रखता था। लोगों का मानना था कि उस तलवार में लकड़ी की होने के बावजूद भी अनोखी दैवीय शक्तियाँ हैं। तताँरा कभी भी अपनी तलवार को अपने से अलग नहीं करता था। वह दूसरों के सामने तलवार का प्रयोग भी नहीं करता था। तताँरा की तलवार जिज्ञासा पैदा करने वाला एक ऐसा राज था जिसको कोई नहीं जानता था।

एक शाम को तताँरा दिन भर की कठोर मेहनत करने के बाद समुद्र के किनारे घूमने के लिए चल पड़ा। समुद्र से ठंडी ठंडी हवाएँ आ रही थी। शाम के समय पक्षियों की जो चहचहाहटें होती हैं वे भी धीरे -धीरे शांत हो रही थी। अपने ही विचारों में खोया हुआ तताँरा समुद्री बालू पर बैठ कर सूरज की आखरी किरणों को समुद्र के पानी पर देख रहा था जो बहुत रंग -बिरंगी लग रही थी। तभी कहीं से उसे मधुर संगीत सुनाई दिया जो उसी के आस पास कोई गा रहा था। तताँरा बैचेन मन से उस दिशा की ओर बढ़ता गया। आखिरकार तताँरा की नज़र एक युवती पर पड़ी उस युवती को यह पता नहीं था कि कोई युवक उसे बिना कुछ बोले बस देखता जा रहा है। उसी समय अचानक एक ऊँची लहर उठी और उसको भिगो कर चली गई। इस तरह अचानक भीगने से वह युवती हड़बड़ा गई और अपना गाना भूल गई। तताँरा ने बहुत ही विनम्र तरीके से उस युवती से पूछा 'तुमने अचानक इतना सुरीला और अच्छा गाना अधूरा ही क्यों छोड़ दिया ?'

अपने सामने एक सुंदर युवक को देख कर वह युवती आश्चर्यचकित हो गई। उसने नकली नाराजगी दिखाते हुए उत्तर दिया।

“पहले ये बताओ कि तुम कौन हो, मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो और इस तरह के अनुचित या बेकार के प्रश्न पूछने का क्या कारण है?”

ततार्रा बार-बार अपना प्रश्न दोहराता रहा। ततार्रा के बार – बार एक ही प्रश्न को दोहराने के कारण युवती चिढ़ गई। युवती ने कहा -आखिर मैं गीत क्यों गाऊँ अर्थात् मैं तुम्हारी बात क्यों मानूँ? क्या उसे गाँव का नियम नहीं मालूम कि एक गाँव का व्यक्ति दूसरे गाँव के व्यक्ति से बात नहीं कर सकता? इतना कह कर वह युवती जाने के लिए तेज़ी से मुड़ी। उसके मुड़ते ही मानो ततार्रा को कुछ होश आया। अब उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था। ततार्रा उस युवती के सामने चला गया और उसका रास्ता रोक कर लाचारी के साथ प्रार्थना करने लगा कि तुम बस अपना नाम बता दो मैं तुम्हें जाने दूंगा। ततार्रा द्वारा नाम पूछे जाने पर युवती ने जवाब दिया ” वामीरो ” यह नाम सुनना ततार्रा को ऐसा लगा जैसे उसके कानों में किसी ने रस घोल दिया हो। ततार्रा ने वामीरो से कहा कि कल वह वही चट्टान पर उसकी प्रतीक्षा करेगा। वह वामीरो को जरूर आने के लिए कहता है।

वामीरो ने ततार्रा के बारे में बहुत सी कहानियाँ सुनी थीं। उसकी सोच में ततार्रा एक बहुत ही शक्तिशाली युवक था। परन्तु वही ततार्रा जब वामीरो के सामने आया तो बिलकुल अलग ही रूप में था। वह सुंदर और शक्तिशाली तो था ही साथ ही साथ वह बहुत शांत, समझदार और सीधा साधा था। वह बिलकुल वैसा ही था जैसा वामीरो अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी। परन्तु दूसरे गाँव के युवक के साथ उसका सम्बन्ध रीति रिवाजों के विरुद्ध था। इसलिए वामीरो ने ततार्रा को भूल जाना ही समझदारी समझा। परन्तु यह आसान नहीं लग रहा था क्योंकि ततार्रा बार-बार उसकी आँखों के सामने आ रहा था जैसे वह बिना पलकों को झपकाए उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो।

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

एक शाम ततार्रा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चहचहाटें शनैः शनैः क्षीण होने को थीं। उसका मन शांत था। विचारमग्न ततार्रा समुद्री बालू पर

बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा। तभी कहीं पास से उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। गीत मानो बहता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा हो। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता। गायन इतना प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा। लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की। चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे।

प्र.1. तताँरा किसको निहार रहा था?

- A) सूरज को
- B) सागर को
- (C) युवती को
- (D) कोई नहीं

प्र.2. सायंकालीन का वातावरण कैसा था?

- A) सूरज डूब रहा था
- B) चारों ओर त्योहार का वातावरण था
- (C) ठंडी हवा चल रही थी
- (D) A और C दोनों

प्र.3. तताँरा अपनी सुध-बुध क्यों खोने लगा?

- A) समुद्र किनारे सुंदर दृश्य देखकर
- B) युवती के गीत के कारण
- C) पक्षियों की चहचहाट के कारण
- D) उपर्युक्त सभी

प्र.4. तताँरा किस तरफ बढ़ने के लिए विवश हो गया?

- A) जहाँ गीत के स्वर सुनाई दे रहे थे
- B) समुद्र की तरफ
- C) लहरों के वेग के कारण
- D) इनमें से कोई नहीं

प्र.5. तताँरा वामीरो कथा के लेखक कौन हैं?

- A) हबीब तनवीर
- B) प्रह्लाद अग्रवाल
- (C) श्री प्रेमचंद
- (D) श्री लीलाधार मंडलोई

हरिहर काका

लेखक कहता है कि वह हरिहर काका के साथ बहुत गहरे से जुड़ा था। लेखक का हरिहर काका के प्रति जो प्यार था वह लेखक का उनके व्यावहार के और उनके विचारों के कारण था और उसके दो कारण थे। पहला कारण था कि हरिहर काका लेखक के पड़ोसी थे



और दूसरा कारण लेखक को उनकी माँ ने बताया था कि हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। जब लेखक व्यस्क हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी। लेखक के गाँव की पूर्व दिशा में ठाकुर जी का विशाल मंदिर था, जिसे गाँव के लोग ठाकुरबारी यानि देवस्थान कहते थे। लोग ठाकुर जी से पुत्र की मन्नत मांगते, मुक़दमे में जीत, लड़की की शादी किसी अच्छे घर में हो जाए, लड़के को नौकरी मिल जाए आदि मन्नत माँगते थे। मन्नत पूरी होने पर लोग अपनी खुशी से ठाकुरजी को रूपए, ज़ेवर, और अनाज चढ़ाया करते थे। जिसको बहुत अधिक खुशी होती थी वह अपने खेत का छोटा-सा भाग ठाकुरजी के नाम कर देता था और यह एक तरह से प्रथा ही बन गई। लेखक कहता है कि उसका गाँव अब गाँव के नाम से नहीं बल्कि देव-स्थान की वजह से ही पहचाना जाता था। उसके गाँव का यह देव-स्थान उस इलाके का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध देवस्थान था।

लेखक हरिहर काका के बारे में बताता हुआ कहता है कि हरिहर काका और उनके तीन भाई हैं। सबकी शादी हो चुकी है। हरिहर काका के अतिरिक्त सभी तीन भाइयों के बाल-बच्चे हैं। कुछ समय तक तो हरिहर काका की सभी चीज़ों का अच्छे से ध्यान रखा गया, परन्तु फिर कुछ दिनों बाद हरिहर काका को कोई पूछने वाला नहीं था। बारामदे के कमरे में पड़े हुए हरिहर काका को अगर किसी चीज़ की जरूरत होती तो उन्हें खुद ही उठना पड़ता। एक दिन उनका भतीजा शहर से अपने एक दोस्त को घर ले आया। उन्हीं के आने की खुशी में दो-तीन तरह की सब्ज़ियाँ, बजके, चटनी, रायता और भी बहुत कुछ बना था। सब लोगों ने खाना खा लिया और हरिहर काका को कोई पूछने तक नहीं आया। हरिहर काका गुस्से में बारामदे की ओर चल पड़े और

जोर-जोर से बोल रहे थे कि उनके भाई की पत्नियाँ क्या यह सोचती हैं कि वे उन्हें मुफ्त में खाना खिला रही हैं। उनके खेत में उगने वाला अनाज भी इसी घर में आता है।

हरिहर काका के गुस्से का महंत जी ने लाभ उठाने की सोची। महंत जी हरिहर काका को अपने साथ देव-स्थान ले आए और हरिहर काका को समझाने लगे की उनके भाई का परिवार केवल उनकी जमीन के कारण उनसे जुड़ा हुआ है। महंत हरिहर काका से कहता है कि उनके हिस्से में जितने खेत हैं वे उनको भगवान के नाम लिख दें। ऐसा करने से उन्हें सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी।

सुबह होते ही हरिहर काका के तीनों भाई देव-स्थान पहुँच गए। तीनों हरिहर काका के पाँव में गिर कर रोने लगे और अपनी पत्नियों की गलती की माफ़ी माँगने लगे। हरिहर काका के मन में दया का भाव जाग गया और वे फिर से घर वापिस लौट कर आ गए।

गाँव के लोग जब भी कहीं बैठते तो बातों का ऐसा सिलसिला चलता जिसका कोई अंत नहीं था। हर जगह बस उन्हीं की बातें होती थी। कुछ लोग कहते कि हरिहर काका को अपनी जमीन भगवान के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उत्तम और अच्छा कुछ नहीं हो सकता। इससे हरिहर काका को कभी न खत्म होने वाली प्रसिद्धि प्राप्त होगी। इसके विपरीत कुछ लोगों की यह मानते थे कि भाई का परिवार भी तो अपना ही परिवार होता है। अपनी जायदाद उन्हें न देना उनके साथ अन्याय करना होगा।

इस विषय पर हरिहर काका ने बहुत सोचा और अंत में इस परिणाम पर पहुँचे कि अपने जीते-जी अपनी जायदाद का स्वामी किसी और को बनाना ठीक नहीं होगा। फिर चाहे वह अपना भाई हो या मंदिर का महंत।

लेखक कहता है कि जैसे-जैसे समय बीत रहा था महंत जी की परेशानियाँ बढ़ती जा रही थी। आधी रात के आस-पास देव-स्थान के साधु-संत और उनके कुछ साथी भाला, गंडासा और बंदूकों के साथ अचानक ही हरिहर काका के आँगन में आ गए। इससे पहले हरिहर काका के भाई कुछ सोचें और किसी को अपनी सहायता के लिए आवाज लगा कर बुलाएँ, तब तक बहुत देर हो गई थी। हमला करने वाले हरिहर काका को अपनी पीठ पर डाल कर कहीं गायब हो गए थे। वे हरिहर काका को देव-स्थान ले गए थे। एक ओर तो देव-स्थान के अंदर जबरदस्ती हरिहर काका के अँगूठे का निशान लेने और पकड़कर समझाने का काम चल रहा था, तो वहीं दूसरी ओर हरिहर काका के तीनों भाई सुबह होने से पहले ही पुलिस की जीप को लेकर देव-स्थान पर पहुँच गए थे। महंत और उनके साथियों ने हरिहर काका को कमरे में हाथ और पाँव बाँध कर रखा था और साथ ही साथ उनके मुँह में कपड़ा ठूँसा गया था ताकि वे आवाज़ न कर सकें। परन्तु

हरिहर काका दरवाजे तक लुढ़कते हुए आ गए थे और दरवाजे पर अपने पैरों से धक्का लगा रहे थे ताकि बाहर खड़े उनके भाई और पुलिस उन्हें बचा सकें। दरवाजा खोल कर हरिहर काका को बंधन से मुक्त किया गया।

लेखक कहता है कि हरिहर काका के साथ जो कुछ भी हुआ था उससे हरिहर काका एक सीधे-सादे और भोले किसान की तुलना में चालाक और बुद्धिमान हो गए थे। उन्हें अब सब कुछ समझ में आने लगा था कि उनके भाइयों का अचानक से उनके प्रति जो व्यवहार परिवर्तन हो गया था, उनके लिए जो आदर-सम्मान और सुरक्षा वे प्रदान कर रहे थे, वह उनका कोई सगे भाइयों का प्यार नहीं था बल्कि वे सब कुछ उनकी धन-दौलत के कारण कर रहे हैं, नहीं तो वे हरिहर काका को पूछते तक नहीं। एक रात हरिहर काका के भाइयों ने भी उसी तरह का व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसा महंत और उनके सहयोगियों ने किया था। हरिहर काका के साथ अब उनके भाइयों की मारपीट शुरू हो गई। जब हरिहर काका अपने भाइयों का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे, तो उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर अपनी मदद के लिए गाँव वालों को आवाज लगाना शुरू कर दिया। उन्होंने उसी पल हरिहर काका को जमीन पर पटका और उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया। लेकिन तब तक बहुत देर हो गई थी, हरिहर काका की आवाज़ें बाहर गाँव में पहुँच गई थी। हरिहर काका ने पुलिस को बताया कि उनके भाइयों ने उनके साथ बहुत ही ज्यादा बुरा व्यवहार किया है, जबरदस्ती बहुत से कागजों पर उनके अँगूठे के निशान ले लिए हैं, उन्हें बहुत ज्यादा मारा-पीटा है।

इस घटना के बाद हरिहर काका अपने परिवार से एकदम अलग रहने लगे थे। उन्हें उनकी सुरक्षा के लिए चार राइफलधारी पुलिस के जवान मिले थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसके लिए उनके भाइयों और महंत की ओर से काफ़ी प्रयास किए गए थे।

पाठ ‘हरिहर काका’ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

प्र. ‘हरिहर काका’ कहानी समाज के किस कटु सत्य को उजागर करती है? स्पष्ट कीजिए।
वर्तमान सामज में हरिहर काका जैसे वृद्ध व्यक्तियों के लिए युवा पीढ़ी का क्या कर्तव्य है ?

प्र. ‘हरिहर काका’ कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा कि अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन जीवन का अनिवार्य अंग है। सगे-संबंधियों, परिचितों, अधिकारियों, सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाओं के कर्मचारियों आदि को किसी-न-किसी कारण पत्र लिखने की आवश्यकता पड़ती है।

एक सुंदर पत्र लिखने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

१. संक्षिप्तता
२. सरलता
३. स्वाभाविकता
४. सुलेख और स्वच्छता

पत्रों के प्रकार:- पत्र प्रमुख रूप से दो प्रकार के होते हैं-

१. औपचारिक पत्र:- ऐसे पत्र जो सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों, प्रधानाचार्यों, प्रकाशकों, व्यावसायिक संस्थाओं के अधिकारियों, दुकानदारों आदि को लिखे जाते हैं, औपचारिक पत्रों की श्रेणी में आते हैं।

२. अनौपचारिक पत्र - ऐसे पत्र जो रिश्तेदारों, मित्रों, परिचितों आदि को लिखे जाते हैं, अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं। इन्हें व्यक्तिगत पत्र भी कहा कहा है।

औपचारिक पत्र

सभी प्रकार के सरकारी, गैर-सरकारी तथा अर्धसरकारी प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र, संपादकीय और व्यावसायिक पत्र औपचारिक पत्रों के अंतर्गत आते हैं।

औपचारिक-पत्र निम्न प्रकार के होते हैं-

1. आवेदन-पत्र
2. शिकायती-पत्र
3. संपादकीय-पत्र

4. पूछताछ संबंधी-पत्र

5. व्यावसायिक-पत्र

औपचारिक पत्र के चरण

अपना पता

दिनांक

पत्र प्राप्तकर्ता का पता

विषय

संबोधन

विषयवस्तु

आभार

हस्ताक्षर

औपचारिक पत्र लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

✓ परीक्षा के दौरान अपना पता सदैव इस प्रकार लिखें-

परीक्षा भवन

अ.ब. केंद्र

✓ अपने पते के बाद एक लाइन रिक्त छोड़ें।

✓ दिनांक का प्रारूप तिथि, माह, वर्ष के अनुरूप रखें। उदाहरणार्थ-

दिनांक: 26 अप्रैल, 2015

(हिन्दी माह:- अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च)

✓ दिनांक के बाद एक लाइन रिक्त छोड़ें।

✓ प्राप्तकर्ता के लिए सर्वप्रथम 'सेवा में' लिखें।

✓ प्राप्तकर्ता का पद अवश्य लिखें।

- ✓ प्राप्तकर्ता के कार्यालय का संक्षिप्त पता लिखें। उदाहरार्थ-
सेवा में
श्रीमान संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली
- ✓ स्पष्ट व संक्षिप्त विषय लिखकर रेखांकित करें।
- ✓ पत्र का प्रारंभ मान्यवर आदि संबोधन के साथ करें।
संबोधन (पुरुष अधिकारी के लिए) – श्रीमान, श्रीयुत, महोदय, महानुभाव, मान्यवर, माननीय आदि।
संबोधन (पुरुष अधिकारी के लिए)- श्रीमती, महोदया, माननीया, आदरणीया।
- ✓ विषयवस्तु का निरूपण सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त, अकार्षक तथा मौलिक शब्दों में करें। सभ्य भाषा का प्रयोग नितांत आवश्यक है। यहाँ तक कि शिकायती पत्रों में भी भाषा की सभ्यता तथा स्वयं व पदाधिकारी की गरिमा को बनाए रखते हुए ही पत्राचार करें।
- ✓ ‘सधन्यवाद’, ‘धन्यवाद सहित’, ‘साभार’, ‘आभार सहित’ आदि शब्दों के द्वारा आभार प्रकट करें।
- ✓ हस्ताक्षर के लिए:- आपका आज्ञाकारी शिष्य, प्रेषक, भवदीय, प्रार्थी, आवेदक आदि शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।
- ✓ आवश्यकतानुसार अपने पद की विज्ञप्ति करें।

प्रश्न. छात्रावास में रहने की अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखें।

अनुच्छेद लेखन

‘मंगल ग्रह पर बढ़ते कदम’ विषय पर अनुच्छेद लिखिए।

सूचना लेखन

किसी जानकारी को कुछ विशेष या आम लोगों तक लिखित रूप में पहुँचाना सूचना लेखन कहलाता है।

सूचना लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें-

1. सूचना की भाषा सहज हो।
2. सीमित शब्दों का प्रयोग हो।
3. सूचना का उद्देश्य स्पष्ट हो।
4. सूचना के जारी होने के स्थान, संस्थान व समिति की जानकारी हो।
5. सूचना किसको संबोधित करती है, इसकी जानकारी हो।
6. कार्यक्रम, समय व स्थान का पूरा विवरण हो।
7. संपर्क के लिए सूचना भेजने वाले का नाम पता हो।
8. सूचना के चारों तरफ किनारा बना हो।

सूचना लेखन के मुख्य बिंदु

1. शीर्षक – सूचना
2. संस्था, विद्यालय या ऑफिस का नाम
3. दिनांक
4. सूचना का मुख्य विषय
5. समस्त जानकारी

6. सूचना देने वाले का नाम व पद

प्रश्न. अपनी कक्षा के लिए विशेष नियमों के निर्माण में योगदान करने के लिए कक्षा प्रतिनिधि की ओर से सूचना पट पर लगाने हेतु सूचना तैयार कीजिए।

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन का उद्देश्य उत्पादक को लाभ पहुँचाना, उपभोक्ता को शिक्षित करना, विक्रेता की मदद करना होता है। विज्ञापन अपने ज्ञान, विचार, उत्पाद, अनुसंधान एवं आविष्कारों के प्रदर्शन का सार्थक मंच है।

विज्ञापन के प्रकार

दृश्य-श्रव्य विज्ञापन

1. दूरदर्शन विज्ञापन
2. आकाशवाणी विज्ञापन

पाठ्य विज्ञापन

1. वर्गीकृत विज्ञापन
2. व्यावसायिक विज्ञापन
3. सरकारी विज्ञापन
4. जनहितार्थ विज्ञापन

विज्ञापन लेखन के समय ध्यान देने योग्य बातें-

1. वह सूचनाप्रद हो।
2. उपभोक्ताओं को आकर्षित कर सके।
3. उपभोक्ताओं को यह समझाने में सफल रहे कि इस उत्पाद को खरीदने में ही समझदारी है।

4. लोगों के मन में अपने उत्पाद की छाप बना सके।
5. आकर्षक स्लोगन या नारे से यह विज्ञापन बना हो।

विज्ञापन लेखन में सम्मिलित तथ्य-

1. वस्तु के मिलने का स्थान
2. वस्तु के लाभ
3. वस्तु के दाम
4. विक्रेता की जानकारी
5. संपर्क का तरीका

विज्ञापन लेखन के महत्वपूर्ण बिंदु-

1. शीर्षक
2. उपशीर्षक
3. मुख्य तथ्य
4. सजावट
5. ट्रेडमार्क और लोगो
6. नारा
7. चित्र
8. किनारा

विज्ञापन लेखन की भाषा –

1. सरल भाषा
2. विशेषण का प्रयोग
3. कम शब्दों का प्रयोग

अभ्यास

‘पल्स-पोलियो उन्मूलन’ के लिए आकर्षक विज्ञापन लगभग 20-25 शब्दों में तैयार कीजिए।

✚ पल्स-पोलियो अभियान ✚

हर माह दूसरे और चौथे रविवार

जल्दी करें आपका बच्चा आपकी जिम्मेदारी

बस दो बूँद दवा पिलाओ पोलियो को भगाओ



संपर्क करें- 0091XXXX 🍎

प्रश्न. नवीं कक्षा के पाठ्यक्रम की पुस्तकें आधे दामों पर बेचने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार करें।

अपठित गद्यांश

दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प को चुनकर लिखिए-

सितंबर के दिन थे। राजधानी में तेज वर्षा और कई दिनों की झड़ी के कारण सड़कें पानी में डूब गई थीं और यातायात ठप्प हो गया था। दिल्ली के गाँवों में इससे भी भयंकर वर्षा हुई, जिसके कारण नजफगढ़ नाले के पानी का स्तर ऊपर चढ़ गया और निकटवर्ती गाँवों के लिए पानी का खतरा बढ़ गया। कुछ अदूरदर्शी किसानों ने जब देखा कि पानी किनारा लाँघकर उनके खेतों में भरने लगा है, तो उन्हें बचाने के लिए उन्होंने कुछ दूरी पर नाले का बाँध काट दिया, ताकि बढ़ा हुआ पानी दूसरी तरफ निकल जाए और उनके खेत बच जाएँ। किंतु उन्हें क्या पता था कि इस प्रकार उफनते नाले की धारा काटकर वे भयंकर बाढ़ को निमंत्रण दे रहे हैं, जिसकी चपेट में आधी दिल्ली आ जाएगी।

आर्यसमाज आदि संस्थाओं की ओर से बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए अपील निकाली गई थीं। वस्त्रों, रुपयों और खाद्य-पदार्थों के ढेर-के-ढेर पहुँचने लगे। राजेन्द्र पार्क, इन्द्रपुरी, जे.जे. कॉलोनी और तिलकनगर के ढलानवाले स्थानों में मकानों के अंदर पानी प्रविष्ट हो चुका था। वहाँ के लोग साइकिलों पर, सिर पर, बगल में और किराए के टट्टुओं, घोंड़ों पर सामान लादकर सुरक्षित स्थानों की ओर जा रहे थे। जिन घरों में अभी पानी नहीं पहुँच पाया था, उनके निवासी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए थे।

नजफगढ़ कस्बे के चारों ओर पानी भरा था। आगे जाकर हमने जो भयंकर दृश्य देखा तो रोंगटे खड़े हो गए। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, वहाँ तक पानी-ही-पानी भरा दिखाई देता था। पानी में कहीं शव तैर रहे थे और कहीं उखड़े हुए पेड़ों पर बैठे हुए लोग अपनी सहायता के लिए पुकार कर रहे थे।

एक ओर बाढ़ का यह भयंकर नजारा था, दूसरी ओर हमने देखा कि कुछ लोग बैठे आराम से ताश खेल रहे थे, हुक्का पी रहे थे और कहकहे लगा रहे थे। संभवतः उनकी हानि कुछ कम हुई

होगी अथवा वे बाढ़ का तमाशा देखने वाले होंगे। कुछ भी हो, उनका हृदय अवश्य पाषाणमय होगा। हमने एक और विचित्र दृश्य देखा। कुछ लोग वहाँ केले और चाय बेचने पहुँचे हुए थे। हमने पूछा तो उन्होंने चाय और केले के दोगुने दाम बताए। इसके विपरीत सामाजिक स्वयंसेवकों का कार्यक्षेत्र भी वहीं था। एक ओर आर्यसमाज का शिविर लगा था, जहाँ भूखों को रोटी, नंगों को वस्त्र, रोगियों को औषधि एवं सभी को बिस्तर-कंबल और सहायता दी जा रही थी। घिरे हुए प्रदेशों में वायुसेना के परिवहन विमान आवश्यक वस्तुएँ गिरा थे। सरकार ने बाढ़-पीड़ितों के लिए पाँच लाख रुपए स्वीकृत किए थे। उनके पास बीस नावें और चार अग्निबोट थीं। सबसे खतरनाक काम था उन सैनिकों का, जो पानी के बहाव को रोकने के लिए बाँध की दरार में रेत के बोरे भर रहे थे।

1) जिन घरों में पानी नहीं पहुँचा था वहाँ के निवासियों का क्या हाल था?

- A) सड़कें डूब गई थीं
- B) यातायात ठप्प हो गया था
- C) A और B दोनों
- D) इनमें से कोई नहीं

2) किसानों ने ऐसा क्या किया जिससे भयंकर बाढ़ ने आधी दिल्ली को अपनी चपेट में ले लिया?

- A) अपने खेतों में पानी छोड़ दिया
- B) नाले काट दिए ताकि पानी बह जाए
- C) किसानों ने बाँध तोड़ दिए
- D) उपर्युक्त सभी

3) नजफगढ़ कस्बे का कैसा दृश्य था?

- A) चारों तरफ पानी ही पानी था

- B) पानी में शव तैर रहे थे
- C) लोग सहायता के लिए पुकार रहे थे
- D) उपर्युक्त सभी

4) स्वयंसेवकों ने बाढ़-पीड़ितों की सहायता कैसे की?

- A) सभी को बिस्तर-कंबल और सहायता दी जा रही थी
- B) कुछ लोग बैठे आराम से ताश खेल रहे थे
- C) कुछ लोग हुक्का पी रहे थे
- D) कुछ लोग कहकहे लगा रहे थे

5) सैनिकों ने पानी के बहाव को कैसे रोका?

- A) केले और चाय बाँट कर
- B) बाढ़-पीड़ितों के लिए पाँच लाख रुपए देकर
- C) परिवहन विमान आवश्यक वस्तुएँ गिराकर
- (D) जो पानी के बहाव को रोकने के लिए बाँध की दरार में रेत के बोरे भरकर

वाक्य रचना व रूपांतरण

(i) सरल से मिश्र वाक्य में बदलिए-

- 1) कमाने वाला खाएगा।
- 2) निर्धन व्यक्ति कुछ नहीं खरीद सकता।
- 3) मुझे अकेला पाकर चार गुंडों ने बहुत पीटा।

- 4) छात्र परिश्रम करने से जीवन में सफल होते हैं।
- 5) समय पर काम करने वालों को पछताना नहीं पड़ता।
- 6) संकट आने पर घबराना उचित नहीं है।
- 7) स्वावलम्बी व्यक्ति सदा सुखी रहते हैं।
- 8) मैंने एक दुबला-पतला व्यक्ति देखा।
- 9) मंत्री बनने पर भी उसका व्यवहार मधुर है।
- 10) मुझे देखकर वह खिसक गया।

(ii) सरल से संयुक्त वाक्य में बदलिए-

- 1) बालक रो-रोकर चुप हो गया।
- 2) आप खाना खाकर आराम करें।
- 3) अपराधी होने के कारण उसे सजा मिली।
- 4) तुम्हारे कहने पर सब मान गए।
- 5) अतिथि के आते ही कार्यक्रम शुरू हुआ।
- 6) सिनेमा छूट जाने पर प्रेक्षक घर जाने लगे।
सूर्य के छिपने पर अंधेरा होता है।
- 7) भोर होते-होते हम लोग मुरादाबाद पहुँचे।
- 8) सुषमा आकर चली गई।
- 9) आगे बढ़कर पुरस्कार प्राप्त कीजिए।

(iii) रचना के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों का सही प्रकार लिखिए-

1. वह फल खरीदने के लिए बाज़ार गया।
2. जहाँ तक दृष्टि जाती है, वहाँ अँधेरा ही अँधेरा है।
3. वसंत आने पर मन प्रसन्न हो जाता है।
4. जो परिश्रम करता है, उसे सब चाहते हैं।
5. वह बीमार था इसलिए यहाँ नहीं आया।

(iv) निम्नलिखित वाक्यों संयुक्त वाक्य में परिवर्तित कीजिए

1. बिमला बीमार होने के कारण आज स्कूल नहीं गई।

उत्तर - _____

2. लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे।

उत्तर - _____

3. वह पुस्तक लेने बाज़ार गया।

उत्तर - _____

4. वहाँ जाकर जल्दी आ जाना।

उत्तर - _____

5. तँतारा को देखकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

उत्तर - _____

6. चूँकि वह अपराधी था, इसलिए उसे सज़ा मिली।

उत्तर - _____

7. जब मोहन आया तभी सोहन चला गया।

उत्तर - _____

8. घर जाकर गृहकार्य पूरा करो।

उत्तर - _____

9. आप द्वार पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करें।

उत्तर - _____

10. आगे बढ़कर पुरस्कार प्राप्त कीजिए।

उत्तर - _____

(v) वाक्य का प्रकार बताइए व निर्देशानुसार वाक्य रूपांतर कीजिए-

1. 'महेश बोला कि मैं कल केरल जा रहा हूँ।' वाक्य का प्रकार बताइए-

2. 'धन आता है। घमंड हो जाता है।' मिश्र वाक्य लिखिए-

उत्तर- _____

3. 'सुरेश आया। सब प्रसन्न हो गए।' संयुक्त वाक्य लिखिए-

उत्तर- _____

4. जैसे ही धूप खिली, कोहरा छँटना शुरू हो गया। वाक्य का प्रकार बताइए तथा सरल में बदलिए-

उत्तर- _____

5. उसने बल्ला घुमाया और ये बने छः रन। वाक्य का प्रकार बताइए तथा सरल में बदलिए-

उत्तर- _____

मीरा के पद



पाठ सार

इन पदों में मीराबाई श्री कृष्ण का भक्तों के प्रति प्रेम और अपना श्री कृष्ण के प्रति भक्ति – भाव का वर्णन करती है। पहले पद में मीरा श्री कृष्ण से कहती हैं कि जिस प्रकार आपने द्रोपदी, प्रह्लाद और ऐरावत के दुखों को दूर किया था उसी तरह मेरे भी सारे दुखों का नाश कर दो।

दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहती, वह श्री कृष्ण की दासी बनाने को तैयार है, बाग़ – बगीचे लगाने को भी तैयार है, गली गली में श्री कृष्ण की लीलाओं का बखान भी करना चाहती है, ऊँचे ऊँचे महल भी बनाना चाहती है, ताकि दर्शन का एक भी मौका न चुके।

श्री कृष्ण के मन मोहक रूप का वर्णन भी किया है और मीरा कृष्ण के दर्शन के लिए इतनी व्याकुल है की आधी रात को ही कृष्ण को दर्शन देने के लिए बुला रही है।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए :

हरि आप हरो जन री भीरा।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धरयो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुञ्जर पीरा।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीरा॥

1. प्रस्तुत काव्यांश की कवयित्री हैं-

क) महादेवी

ग) सुभद्राकुमारी चौहान

ख) मीराबाई

घ) द्रोपदी

2. मीरा अपने प्रभु से माँग करती हैं-

क) प्रभु उसे उठा ले

ख) उसका घर बसा दे

ग) दुनिया के सारे सुख दे

घ) भक्तजन की पीड़ा दूर कर दे

3. 'नरहरि' रूप धारण करके प्रभु ने रक्षा की-

क) मीरा की

ख) द्रौपदी की

ग) प्रह्लाद की

घ) हिरण्यकश्यप की

4. कृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचाई थी-

क) दुशासन से छुड़ाकर

ख) दुशासन को मारकर

ग) वस्त्र प्रदान कर

घ) पक्ष में लड़कर

5. 'काटी कुञ्जर पीर' से तात्पर्य है-

क) हाथी के पाँव को काटना

ख) हाथी को पीड़ा से मुक्त किया

ग) हाथी को मोक्ष प्रदान किया

घ) इनमें से कोई नहीं।

पाठ - डायरी का एक पन्ना

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आजादी की इच्छा रखने वाले महान इंसानों में से एक थे। वह दिन-प्रतिदिन जो भी देखते थे, सुनते थे और महसूस करते थे, उसे अपनी एक निजी डायरी में लिखते रहते थे। इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लिखा था।

लेखक कहते हैं कि 26 जनवरी 1931 का दिन हमेशा याद रखा जाने वाला दिन है। 26 जनवरी 1930 के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और 26 जनवरी 1931 को भी फिर से वही दोहराया जाना था, जिसके लिए बहुत सी तैयारियाँ पहले से ही की जा चुकी थी। सिर्फ़ इस दिन को मानाने के प्रचार में ही दो हज़ार रुपये खर्च हुए थे। सभी मकानों पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे उन्हें स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे। पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ पूरे शहर में पहरा लिए घूम-घूम कर प्रदर्शन कर रही थी। न जाने कितनी गाड़ियाँ शहर भर में घुमाई जा रही थी। घुड़सवारों का भी प्रबंध किया गया था।

स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था, इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए परन्तु वे पार्क के अंदर ही ना जा सके। वहाँ पर भी काफी मारपीट हुई और दो – चार आदमियों के सर फट गए। मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी, मदालसा बजाज – नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़कियों को उत्सव का मतलब समझाया। दो – तीन बाजे पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई। जिनमें मुख्य कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे। सुभाष बाबू के जुलूस की पूरी ज़िम्मेवारी पूर्णोदास पर थी (उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था) परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज 26 जनवरी 1931 तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। एक ओर पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कहीं भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। अगर किसी भी तरह से किसी ने सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे। इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकाला गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की ओर निकले। जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियां पड़ी। परन्तु फिर भी सुभाष बाबू बहुत जोर से वन्दे -मातरम बोलते जा रहे थे। इस तरफ इस तरह का माहौल था और दूसरी तरफ स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियां बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी। सुभाष बाबू को भी पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियां वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकट्ठी हो गई। पुलिस बीच -बीच में लाठियां चलना शुरू कर देती थी। इस बार भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जखमी हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते - आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियां वहीं मोड़ पर बैठ गई।

उन स्त्रियों को लालबाजार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया। मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी, उसे भी गिरफ्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ्तार नहीं किया गया था। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खिंचवा रहे थे। उस समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे।

प्रश्न. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

बड़े बाजार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं घुड़सवारों का प्रबंध था। कहीं भी ट्रैफिक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था।

क) पाठ तथा लेखक का नाम बताइए।

- A) प्रेमचंद
- (B) स्वामी आनंद
- (C) सीताराम सेकसरिया
- (D) निदा फाजली

ख) उपर्युक्त गद्यांश में किस अवसर का वर्णन किया गया है?

- A) स्वतन्त्रता आंदोलन
- (B) गणतन्त्र दिवस
- (C) असहयोग आंदोलन
- (D) स्वतन्त्रता दिवस

ग) लोगों का इस सजावट के बारे में क्या विचार था?

- A) मानो स्वतन्त्रता मिल गई हो
- (B) सुभाषचंद्र बोस के आने की खुशी
- (C) लोगों में भरपूर जोश था
- (D) महिलाओं का योगदान

घ) पुलिस ने पार्कों तथा मैदानों को सुबह से ही क्यों घेर लिया था?

- A) ध्वजारोहण रोकने के लिए
- B) लोग हुड़दंग न मचाएँ
- (C) लोग घूम न सकें
- (D) इनमें से कोई नहीं

पाठ - अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले

पाठ का सारांश

इस पाठ में वर्णन किया गया है कि किस तरह आदमी नाम का जीव सब कुछ समेटना चाहता है और उसकी यह भूख कभी भी शांत होने वाली नहीं है। वह इतना स्वार्थी हो गया है कि दूसरे प्राणियों को तो पहले ही बेदखल कर चुका था परन्तु अब वह अपनी ही जाति अर्थात् मनुष्यों को ही बेदखल करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता। परिस्थिति यह हो गई है कि न तो उसे किसी के सुख-दुःख की चिंता है और न ही किसी को सहारा या किसी की सहायता करने का इरादा।

लेखक पाठ में ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण देते हैं जो सभी तरह के प्राणधारियों की रक्षा करना अपना कर्तव्य मानते थे। इनमें सबसे पहला उदाहरण सुलेमान का है। सुलेमान ईसा से 1025 वर्ष पहले एक बादशाह थे। वह सभी पशु-पक्षियों की भाषा भी जानते थे। एक बार सुलेमान अपनी सेना के साथ एक रास्ते से गुजर रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने जब रास्ते से गुजरते हुए घोड़ों के चलने की आवाज़ सुनी तो वे डर गईं और एक दूसरे से कहने लगी कि जल्दी से सभी अपने-अपने बिलों में चलो। सुलेमान ने उनकी बातें सुन ली, वे चींटियों से बोले कि तुम में से किसी को भी घबराने की जरूरत नहीं है, सुलेमान को खुदा ने सबकी रक्षा करने के लिए बनाया है। सुलेमान की नेक दिली की तरह एक और उसी तरह की घटना का वर्णन सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी जीवन कथा में किया है। एक दिन शेख अयाज़ के पिता कुँए से नहाकर लौटे। अभी उनके पिता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था कि उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक काले च्योंटे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। इस पर माँ ने पूछा कि क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पिता ने जवाब दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहे हैं। बाइबिल और जितने भी दूसरे पवित्र ग्रन्थ हैं उनमें नूह नाम के एक ईश्वर के सन्देश वाहक का वर्णन मिलता है। उनका असली नाम नूह नहीं था उनका नाम लश्कर था, लेकिन अरब के लोग उनको इस नाम से याद करते हैं क्योंकि वे सारी उम्र रोते रहे अर्थात् दूसरों के दुःख में दुखी रहते थे।

लेखक कहता है कि जब पृथ्वी अस्तित्व में आई थी, उस समय पूरा संसार एक परिवार की तरह रहा करता था लेकिन अब इसके टुकड़े हो गए हैं और सभी एक-दूसरे से दूर हो गए हैं। वातावरण में इतना अधिक बदलाव हो गया है कि गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज़ कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या, ये सब मानव द्वारा किये गए प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का नतीजा है। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है।

लेखक कहता है कि बचपन में उनकी माँ हमेशा कहती थी कि शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं। पूजा के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि उस समय फूलों को तोड़ने पर फूल श्राप देते हैं। नदी पर जाओ तो उसे नमस्कार करनी चाहिए वह खुश हो जाती है। कभी भी कबूतरों और मुर्गों को परेशान नहीं करना चाहिए।

ग्वालियर में लेखक का एक मकान था, उस मकान के बरामदे में दो रोशनदान थे। उन रोशनदानों में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा। अब लेखक समय के साथ मनुष्यों की बदलती भावनाओं के लिए एक उदाहरण देते हैं - दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर आपने घोंसला बना रखा था। उनके बच्चे अभी छोटे थे। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ

जाली लगा दी थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर रात-भर चुप-चाप और दुखी बैठे रहते थे। मगर अब न तो सोलोमेन है जो उन कबूतरों की भाषा को समझ कर उनका दुःख दूर करे और न ही लेखक की माँ है जो उन कबूतरों के दुःख को देख कर रात भर प्रार्थना करती रहे। अर्थ यह हुआ कि समय के साथ-साथ व्यक्तियों की भावनाओं में बहुत अंतर आ गया है।

अंत में लेखक हमें बताना चाहता है कि हमें नदी और सूरज की तरह दूसरों के हित के कार्य करने चाहिए और तोते की तरह सभी को सामान समझना चाहिए तभी संसार के सभी जीवधारी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं।

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

ऐसी एक घटना का जिक्र सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी अपनी आत्मकथा में किया है। उन्होंने लिखा है – एक दिन उनके पिता कुएँ से नहाकर लौटे। माँ ने भोजन परोसा। उन्होंने जैसे ही रोटी का कौर तोड़ा उनकी नज़र अपनी बाजू पर पड़ी। वहाँ एक काला च्योटा रेंग रहा था वह भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए। माँ ने पूछा, ‘क्या बात है? भोजन अच्छा नहीं लगा?’ शेख अयाज़ के पिता बोले, ‘नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घरवाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ के पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।’

प्र.1 च्योटा कहाँ और किस पर रेंग रहा था ?

(क) लेखक के हाथ पर।

(ख) सिन्धी कवि के कंधे पर।

(ग) शेख अयाज़ के पिता के कंधे पर।

(घ) उपरोक्त सभी

प्र.2 शेख अयाज़ किस भाषा में कविता की रचना करते थे ?

(क) सिन्धी।

(ख) हिन्दी

(ग) उर्दू

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.3 शेख अयाज़ खाना छोड़कर कहाँ गए ?

(क) घर के बाहर

(ख) कुएँ पर

(ग) च्योंटे को घर पहुंचाने गए

(घ) ख और ग दोनों

प्र.4 गद्यांश के आधार पर शेख अयाज़ के पिता की एक विशेषता क्या है?

(क) शांत स्वभाव

(ख) निर्मल विचार

(ग) परोपकारी

(घ) उपरोक्त सभी

प्र.5 शेख अयाज़ भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए?

(क) खाना अच्छा न होने के कारण

(ख) किसी के आने के कारण

(ग) च्योंटे को उसके घर पहुंचाने के कारण

(घ) उपरोक्त सभी

पत्र लेखन

आपके लेख 'वृद्धों के प्रति बढ़ते अपराध' ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। 'दैनिक जागरण' पाक्षिक-पत्र के संपादक से इसे छापने का आग्रह कीजिए।

अनुच्छेद लेखन

'दुनिया से अनूठी- भारतीय संस्कृति' विषय पर अनुच्छेद लिखिए।

विज्ञापन लेखन

'कल्पना ट्रेवल एजेंसी' की ओर से अंदमान निकोबार द्वीप घूमने जाने का विज्ञापन दीजिए।

सूचना लेखन

विद्यालय के भ्रमण कार्यक्रम अध्यक्ष की ओर से कक्षा दस के छात्र-छात्राओं के लिए 'फरारी वर्ल्ड' घूमने जाने की सूचना लिखिए।

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रवाधान किया है। इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सदभाव, सहयोग और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्वपूर्ण माने गए हैं। ये सभी नियम यदि एक व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के रूप में भी अनिवार्य माने जाएँ तो उसका अपना जीवन भी सुखी और आनंदमय हो सकता है। इन सभी गुणों का विकास एक बालक में यदि उसकी बाल्यावस्था में ही किया जाए तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। इन गुणों के कारण वह अपने परिवार, आस-पड़ोस, विद्यालय में अपने सहपाठियों एवं अध्यापकों के प्रति यथोचित व्यवहार कर सकेगा।

वाणी एवं व्यवहार की मदुरता सभी के सुखदायी होती है, समाज में हार्दिक सदभाव की वृद्धि करती है। किंतु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है। अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी होता है। जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे आदमी के व्यवहार से समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण नहीं बनता।

जिस प्रकार एक व्यक्ति समाज में रहकर अपने व्यवहार से कर्तव्य और अधिकार के प्रति सजग रहता है, उसी तरह देश के प्रति भी उसका व्यवहार कर्तव्य और भावना से भावित रहना चाहिए। उसका कर्तव्य हो जाता है कि न तो वह स्वयं को कोई ऐसा काम करे और न दूसरों को करने दे, जिससे देश के सम्मान, सम्पत्ति और स्वाभिमान को ठेस लगे। समाज एवं देश में शांति बनाए रखने के लिए धार्मिक सहिष्णुता भी आवश्यक है। यह वृत्ति तभी आ सकती है जब व्यक्ति संतुलित व्यक्तित्व का हो।

प्रश्न 1. समाज एवं राष्ट्र के हित में नागरिक के लिए कैसे गुणों की अपेक्षा की जाती है?

- A) वाणी और व्यवहार की शुद्धि
- (B) सहयोग और सेवा की भावना
- (C) पारस्परिक सदभाव
- (D) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 2. नागरिक द्वारा प्राप्त गुण किसी व्यक्ति के निजी जीवन में किस प्रकार उपयोगी हो सकते हैं?

- A) वह परीक्षा में सफल होगा
- (B) श्रेष्ठ नागरिक बन सकेगा
- (C) आज्ञाकारी होगा
- (D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3 वाणी और व्यवहार की मधुरता सबके लिए सुखदायी क्यों मानी गई है?

- A) मधुर वाणी लोगों को ठेस पहुंचाने वाली होती है
- (B) लोग आपके शत्रु बनेंगे
- (C) समाज में सद्भाव की वृद्धि होती है
- (D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5 'धार्मिक सहिष्णुता' से क्या आशय है?

- A) विभिन्न धर्मों में सद्भाव होना
- (B) एक दूसरे के प्रति सहानुभूति रखना
- (C) बड़ों का सम्मान करना
- (D) A और B दोनों

च. 'अहंकारहीन'का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए।

- A) हीन रूपी अहंकार, कर्मधारय
- (B) हीन है जो अहंकार, कर्मधारय
- (C) अहंकार से हीन, तत्पुरुष
- (D) अहंकार के लिए हीन, तत्पुरुष

दिए गए मुहावरों/लोकोक्ति के अर्थ याद कीजिए -

मुहावरा

अर्थ

1. देश पर जब जब विपत्ति आई है देश का हर नागरिक मदद के लिए _____ आया है।

क) आँखों में धूल झोंकना

ग) आगे आना

ख) पीछा करना

घ) बाट जोहना

2. हमशक्ल भाइयों को साथ-साथ देख कोई भी _____ जाता है।

क) साये से भागना

ग) मज़ा चखाना

ख) चक्कर खाना

घ) हावी होना।

पाठ - पर्वत प्रदेश में पावस

पाठ सारांश

कवि ने इस कविता में प्रकृति का ऐसा वर्णन किया है कि लग रहा है कि प्रकृति सजीव हो उठी है। कवि कहता है कि वर्षा ऋतु में प्रकृति का रूप हर पल बदल रहा है कभी वर्षा होती है तो कभी धूप निकल आती है। पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे हैं जैसे पर्वतों की आँखें हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतों से गिरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कहीं उड़ गए हों अर्थात् गायब हो गए हों, चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए :

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरूवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

1. 'झरने के झर-झर स्वर' में कवि ने क्या कल्पना की है?
 - क) मानों ये झरने पर्वत की महानता का गुणवान कर रहे हैं
 - ख) मानों झरने तालियाँ बजा रहे हैं
 - ग) मानों ये झरने पर्वत को स्नान करा रहे हों
 - घ) इनमें से कोई नहीं।

2. 'झाग-भरे निर्झर' क्यों कहा गया है?
 - क) झरने की श्वेत धारा के कारण
 - ख) बुलबुलों के कारण
 - ग) साबुन के घोल के कारण
 - घ) निर्मलता के कारण

3. पहाड़ों पर उगे वृक्ष कैसे लग रहे हैं?
 - क) मन में उठने वाली उच्च आकांक्षाओं के समान
 - ख) मोती की लड़ियों के समान
 - ग) नदी में उठने वाली लहरों के समान
 - घ) उपर्युक्त सभी

4. 'मद में नस-नस उत्तेजित कर' से क्या तात्पर्य है?
 - क) झरने मस्ती में उत्तेजित होकर गा रहे हों
 - ख) झरनों की नस-नस में मस्ती भरी है
 - ग) झरने उँची-उँची आवाज़ में पर्वत का गुणगान कर रहे हैं
 - घ) झरने के स्वर को सुनकर दर्शक झूम रहे हैं।

5. 'अनिमेष' का तात्पर्य है-

क) तुरंत	ख) अपलक
ग) अनियमित	घ) पलक झपक कर

क वता – कर चले हम फदा

पाठ सारांश

प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों ना गँवाना पड़े। भारत – चीन युद्ध के दौरान सैनिकों को गोलियाँ लगने के कारण उनकी साँसें रुकने वाली थी, ठण्ड के कारण उनकी नसों में खून जम रहा था परन्तु उन्होंने किसी चीज़ की परवाह न करते हुए दुश्मनों का बहादुरी से मुकाबला किया और दुश्मनों को आगे नहीं बढ़ने दिया। सैनिक गर्व से कहते हैं कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम खुशी खुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतीक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात् हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं पड़ने देंगे। लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की खुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है अर्थात् सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नहीं खोना चाहते। जिस तरह से दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह सैनिकों ने भी अपने प्राणों का बलिदान दे कर धरती को खून से लाल कर दिया है सैनिक कहते हैं कि हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरूरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बढ़े तो उसे तोड़ दो। अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए

कर चले हम फ़िदा जानो तन साथियो

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

साँस थमती गई, नब्ज जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्र.1 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' का अर्थ है –

- क) हिमालय दुश्मन के कब्जे में नहीं जाने दिया।
- ख) शत्रु देश पर आक्रमण न कर सके।
- ग) भारत के सम्मान को बनाए रखा।
- घ) प्राणों की कुर्बानी देकर देश की रक्षा की।

प्र.2 'अब तुम्हारे हवाले' में 'तुम्हारे' किसके लिए आया है?

- क) कवि के लिए
- ख) नेताओं के लिए
- ग) अन्य सैनिकों के लिए
- घ) देशवासियों के लिए

प्र.3 'मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो' का अर्थ है –

- क) कि वे शत्रु के लिए टेढ़े अर्थात् बाँके हैं।
- ख) कि वे शहीद होते हुए भी जवान रहना चाहते हैं
- ग) कि मरते-मरते भी जवानों में साहस और वीरता की कमी नहीं थी।
- घ) तीनों सही हैं।

प्र.4 पहली पंक्ति में 'हम' कौन हैं ?

क) कवि

ख) जनता

ग) सैनिक

घ) नेता

प्र.5 फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया— ‘बढ़ते कदम’ का क्या अर्थ है ?

क) जान बचाने के लिए उठते कदम

ख) शत्रु को खदेड़ने के लिए उठते कदम

ग) सीमा पार करने के लिए उठते कदम

घ) चलने की कोशिश करते कदम

क वता - तोप

पाठ सारांश

प्रस्तुत पाठ हमें याद दिलाता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत में उसका स्वागत किया गया था परन्तु धीरे-धीरे वो हमारी शासक बन गई। अगर उन्होंने कुछ बाग-बगीचे बनाये तो उन्होंने तोपें भी तैयार की। कवि कहते हैं कि यह जो 1857 की तोप आज कंपनी बाग के प्रवेश द्वार पर रखी गई है इसकी बहुत देखभाल की जाती है। जिस तरह यह कंपनी बाग हमें विरासत में अंग्रेजों से मिला है उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेजों से ही विरासत में मिली है। सुबह और शाम को बहुत सारे व्यक्ति कंपनी के बाग में घूमने के लिए आते हैं। तब यह तोप उन्हें अपने बारे में बताती है कि मैं अपने ज़माने में बहुत ताकतवर थी। अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है- छोटे बच्चे इस पर बैठ कर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। चिड़ियाँ इस पर बैठ कर आपस में बातचीत करने लग जाती हैं। कभी-कभी शरारती चिड़ियाँ खासकर गौरैयाँ तोप के अंदर घुस जाती हैं। वह हमें बताना चाहती है कि ताकत पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि ताकत हमेशा नहीं रहती।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कंपनी बाग के मुहाने पर

धर रखी गई है यह 1857 की तोप

इसकी होती है बड़ी सभाल, विरासत में मिले

कंपनी बाग की तरह

साल में चमकाई जाती है दो बार।

सुबह-शाम कंपनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी

उन्हें बताती है यह तोप

कि मैं बड़ी जबर

उड़ा दिए थे मैंने

अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे

अपने ज़माने में

1) तोप कब की है?

क) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की

ख) सन 1857 की

ग) अंग्रेज़ों के समय की

घ) द्वितीय स्वतंत्रता संग्राम की

2) तोप को कहाँ रखा गया है?

क) अमृतसर के कंपनी बाग में

ख) जलियाँवाला बाग में

ग) कानपुर के कंपनी बाग में

घ) दिल्ली के कंपनी बाग में

3) तोप को किन दो अवसरों पर चमकाने की बात की गई है?

क) स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस पर

ख) होली और दीपावली पर

ग) होली और स्वतंत्रता दिवस पर

घ) दीपावली और गणतंत्र दिवस पर

4) तोप सैलानियों को क्या बताती है?

क) लोगों के भविष्य में अत्याचार न सहने का वादा

ख) तोप की शक्ति

ग) तोप की निष्क्रियता

घ) तोप के अहिंसात्मक उपयोग की बात

5) विरासत में मिली तोप की देखभाल, यह बताने के लिए की जाती है कि-

क) हमारे पूर्वजों ने गलतियाँ की ख) तोप हमारी शक्ति के सामने व्यर्थ है

ग) तोप एकता से रहने वालों का कुछ नहीं बिगाड़ सकती

घ) तोप से डरना चाहिए

मुहावरे

i तोप

मुँह बंद होना

चुप होना

वकील ने ऐसे ऐसे सवाल पूछे कि मुजरिम का _____ हो गया।

क) आगे आना

ख) हावी होना

ग) मुँह बंद होना

घ) सिर फिरना

पत्र लेखन

‘नोवेल्टी सिनेमाघर’ के बाहर आप पर हुए पथराव की शिकायत करते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

अनुच्छेद लेखन

‘बरखा की झड़ी’ का अपना अनूठा अनुभव अनुच्छेद रूप में लिखिए।

सूचना लेखन

विद्यालय के मुख्य अध्यापक की ओर से आगामी परीक्षाओं को मद्दे-नज़र रखते हुए ‘रॉक स्पोर्ट’ ट्रिप स्थगित करने की सूचना जारी कीजिए।

विज्ञापन लेखन

क्रिकेट के मैच की टिकट बेचने के लिए विज्ञापन लिखिए।

